खरीफ प्याज

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 01–03

खरीफ प्याज की खेती – किसानों के लिए वरदान

जसदीप कौर[1], निखिल ठाकुर[2], आकृति[2] एवं रेवा जरयाल[3]

सब्जी विज्ञान और फूल विभाग[1], सब्जी विज्ञान विभाग[2] एवं बीज विज्ञान विभाग[3]

[1]चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश।

[3]डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत।

Email Id: nikhilthakur529@gmail.com

परिचय:

खरीफ मौसम में प्याज का उत्पादन एक महत्वपूर्ण कृषि गतिविधि है जो भारतीय कृषि में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्याज एक प्रमुख नकदी फसल है और इसकी खेती व्यापक रूप से देश के विभिन्न भागों में की जाती है। भारत में प्याज का व्यापक उत्पादन होता है, जिसे चीन के बाद दूसरे स्थान पर रखा जाता है। यह फसल मुख्य रूप से महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, तामिलनाडु, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों में उगाई जाती है। महाराष्ट्र में प्याज की तीन फसलें प्रतिवर्ष उगाई जाती हैं। उत्तर भारत में इसकी खेती केवल रबी मौसम में होती है, जहां बीजों को अक्तूबर–नवम्बर में बोया जाता है और दिसम्बर में पौधों को लगाया जाता है। रबी फसल अप्रैल–मई में पकी होती है और इसका भंडारण अगस्त–सितंबर तक ही संभव होता है। उत्पादकों और विक्रेताओं को इसे जल्दी से उपयोग में लाने के लिए, यह अवधि महत्वपूर्ण होती है क्योंकि पौधों में अंकुरन शुरू हो जाता है। इसके कारण उत्तरी भारत में अक्तूबर महीने से प्याज की कमी का अनुभव होता है। इन दिनों यहां प्याज की कीमतें बहुत ज्यादा बढ़ जाती हैं क्योंकि उन्नत भारतीय राज्यों और अन्य देशों से आयात की जाती है। खरीफ मौसम में प्याज की उत्पादन वर्षभर में प्याज की उपलब्धता बढ़ाने और किसानों की आय को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण विकल्प है। खरीफ मौसम में प्याज की फसल अक्तूबर–नवम्बर में तैयार होती है, जिससे अक्तूबर माह में प्याज की आसमान छूती कीमतों को सामान्य बनाए रखने में सहायता मिलती है।

खरीफ प्याज उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण चीजें हैं, उन्हें निम्नलिखित रूप में परामर्श दिया जा सकता है:

उपयुक्त जलवायु:

प्याज की खेती के लिए मानवीय धारणा करते हुए सही जलवायु चुनना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उचित बीज चयन:

अच्छी गुणवत्ता वाले प्याज के बीजों का उचित चयन करना आवश्यक है।

किस्में:

खरीफ प्याज की कुछ प्रमुख निम्नलिखित किस्में:

- **बसवंत–780:** यह भारतीय खरीफ प्याज की अन्य प्रमुख किस्म है। इसकी प्याज की आकार बड़ी होती है और रंग गहरा लाल होता है। इसकी पैदावार उच्च होती है और इसे विभिन्न क्षेत्रों में उगाना संभव होता है।
- **भीमा डार्क रेड:** यह एक रंगीन खरीफ प्याज की किस्म है जिसका रंग गहरा लाल होता है। इसकी प्याज की आकार मध्यम से बड़ी होती है और इसकी पैदावार उच्च होती है। यह किस्म उच्च तापमान और उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त होती है।
- **अर्का कल्याण:** यह एक औद्योगिक खरीफ प्याज की किस्म है जिसकी प्याज की आकार बड़ी होती है और रंग गहरा लाल होता है। इसकी पैदावार उच्च होती है और यह उच्च तापमान और अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से उगाने के लिए संबंधित होती है।
- **एग्रीफाउण्ड डार्क रेड:** यह एक खरीफ प्याज की किस्म है जिसके प्याज काफी गहरे लाल रंग के होते हैं और उनका व्यास 5.43 सेंटीमीटर

Krishi Kumbh
Online E-Magazine
www.KrishiKumbh.com

होता है। यह किस्म 100 दिनों में पूरी तरह से पकने के लिए तैयार हो जाती है। औसतन, इसकी प्रति हेक्टेयर उपज 165 से 225 क्विंटल तक होती है।

खेती की जमीन:

खरीफ प्याज के लिए उचित जमीन का चयन करना आवश्यक है, जिसमें अच्छी ड्रेनेज करने वाली और पोषक तत्वों से भरपूर मिट्टी हो।

समयबद्ध बोना:

बीजों को सही समय पर बोना जाना चाहिए, जो मई और जून महीनों में होता है।

उत्पादन पद्धति:

खरीफ मौसम में प्याज की उत्पादन को दो विभिन्न तकनीकों से किया जा सकता है।

क. पौध उत्पादन विधि : पौध उत्पादन विधि में प्याज के पौधे तैयार करने के लिए निम्न चरणों का पालन करें:

- **पौध नर्सरी की तैयारी:** एक मीटर चौड़ी, तीन मीटर लंबी, और 15–20 सेंटीमीटर ऊंची क्यारियां तैयार करें। दो क्यारियों के बीच में 30–40 सेंटीमीटर का अंतर रखें। क्यारी की सतह समतल और चिकनी होनी चाहिए।
- **बीज की उपचारित करना:** बीज को बोने से पहले थीरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। इससे कमर तोड़ रोग का खतरा कम होता है।
- **बीज बोना:** मई–जून में, 5–7 सेंटीमीटर की दूरी पर बीज को एक कतार में बोएं। इन्हें छानी हुई गोबर की खाद से ढक दें और हल्की सिंचाई करें, ताकि मिट्टी में उचित नमी और तापमान बने रहें।
- **अंकुरण के बाद देखभाल:** बीज अंकुरण के बाद तुरंत घास को हटा दें। लगभग 6 से 7 सप्ताह में पौध प्रतिरोपण के लिए तैयार हो जाते हैं। इस तरह तैयार पौधों को जुलाई में 15×10 सेंटीमीटर की दूरी पर रोपाई की जानी चाहिए।
- **पौध रोपण के बाद देखभाल:** पौध रोपण के बाद, अन्य कार्यों को सम्पादित करें जैसे सही खाद और उर्वरक का उपयोग, सिंचाई का खरपतवार का नियंत्रण और पौध संरक्षण, ताकि अच्छी उपज हो सके।

इसके अलावा, जून–जुलाई में अधिक गर्मी और नमी की अधिकता के कारण खरीफ प्याज का पनीरी उत्पादन कठिन हो सकता है। इसलिए, इस अनिश्चितता से बचने के लिए किसानों को सैटस विधि का प्रयोग करके खरीफ प्याज का उत्पादन करने की सिफारिश की जाती है।

ख. सेटस उत्पादन विधि: सैटस उत्पादन विधि में निम्नलिखित चरणों का पालन किया जाता है:

- **बीजाई की तैयारी:** 15 फरवरी से मार्च के पहले सप्ताह तक, एन 53 और एण्ड डार्क रेड किस्मों के बीज की बीजाई की जाती है। क्यारी को ऐसी जगह बनाएं जहां दिनभर धूप हो और देखभाल आसान हो। क्यारी की लंबाई 3 मीटर, चौड़ाई 1 मीटर और ऊंचाई 15–20 सेंटीमीटर होनी चाहिए। धूप की लंबाई को आवश्यकतानुसार बढ़ाया जा सकता है, लेकिन चौड़ाई 1.00 या 1.30 मीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इससे क्षेत्रफल में असुविधा हो सकती है।
- खाद का उपयोग: बीजाई से पहले, क्यारियों में गली सड़ी गोबर की खाद (20–25 किलोग्राम) और 12:32:16 मिश्रित खाद (100 ग्राम प्रति क्यारी) का उपयोग करें।
- बीज को उपचारित करना: बीजाई से पहले, बीज को फफूंदनाशक दवा जैसे कैप्टन, बैविस्टीन, थीरम 2 या 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। बीज को सूखे बर्तन में रखें और उसे दवा के साथ हल्के पानी के संपर्क में आने तक हिलाएं, ताकि दवा बीजों पर अच्छी तरह से चिपके।
- बीजाई: बीजाई से पहले, बीज को छाया में सुखा लें। बीज का घनत्व 10 ग्राम प्रति वर्गमीटर या 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई की जाती है। 125–150 ग्राम बीज प्रति क्यारी की दर से बीजाई करें।
- सिंचाई और पत्तों का संभालना: सिंचाई को शाम के समय फव्वारे से करें। इस तरह तैयार पौधों

Krishi Kumbh
Online E-Magazine
www.KrishiKumbh.com

को अप्रैल–मई तक नर्सरी में ही रखें। जब पनीरी 8–10 सेंटीमीटर ऊँची हो जाए, तब सिंचाई बंद कर दें, ताकि पत्ते गर्मी के कारण मुरझाने लगें। पीली पड़ी पनीरी को जून के प्रारंभ में उखाड़कर पतली तह में छाया में सुखाएं और हिलाते रहें। पत्तों को अच्छी तरह से सुखने के बाद उन्हें गड्डियों से अलग करें और गठियों को भंडारण करें। अगस्त के दूसरे पखवाड़े में, 15 सेंटीमीटर पंक्ति से पंक्ति और 7–10 सेंटीमीटर गट्टी से गठियों की दूरी पर बीजाई करें।

सैटस उत्पादन

इस तरीके से, आप खरीफ में प्याज की बेकार खेती के लिए 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से बढ़िया उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

अन्य सस्य क्रियाएं:

सैटस रोपण के बाद अन्य सस्य क्रियाएं जैसे की खाद एवं उर्वरक, सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण आदि प्याज की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। खरीफ प्याज उत्पादन के लिए 250 क्विंटल गोबर की खाद, 250 कि.ग्रा. यूरिया 500 कि. या सुपर फास्फेट व 100 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश की प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकता पड़ती है। गोबर की खाद, सुपर फॉस्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाश की कुल मात्रा तथा यूरिया खाद की आधी मात्रा खेत तैयार करते समय खेत में मिलायें तथा बाकी बची हुई यूरिया की आधी मात्रा दो बराबर भागों में रोपाई के एक माह बाद तथा दूसरी उसके एक माह बाद क्रमशः डालें ।

उचित नमी होने पर गठियां 8–8 दिन में अंकुरित हो जाती है। समय–समय पर निराई गुड़ाई करें। इसे हरे प्याज के तौर पर पत्तों सहित अक्तूबर माह में बेचा जा सकता है तथा बाजार में इन दिनों अधिक दाम होने के कारण किसान हरे प्याज से अधिक से अधिक आमदनी कमा सकते हैं।

खरीफ प्याज के डण्ठल रबी प्याज की तरह पीले नहीं पड़ते या सूखते नहीं अतः इसके कन्द जब पर्याप्त आकार के हो जायें तो इसके डण्ठलों गिरा दें। नवम्बर–दिसम्बर में फसल खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। फसल को सही समय पर न निकालने से इसमें नई जड़े तथा पत्तियां निकलने लगती हैं, जिससे इनकी गुणवत्ता में गिरावट आती है। कन्दों को 12–15 से.मी. पत्तों सहित छाया में एक माह तक सुखाने के बाद इन्हें खुली हवा व शुष्क स्थान पर भण्डारित करके 4–5 मास तक रखा जा सकता है। खरीफ प्याज की औसत उपज 160–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर (किस्म के अनुसार) प्राप्त की जा है।

रोग नियंत्रणः

फसल में समय–समय पर रोगों का नियंत्रण करना आवश्यक है और अच्छे रोगनाशकों का उपयोग करना चाहिए।

कटाईः

प्याज की फसल को 50% ऊपरी गिरावट के बाद काटना चाहिए, जो कि फसल के परिपक्वता का संकेत होता है। हालांकि, खरीफ मौसम में, बल्ब लगभग 90–110 दिनों में परिपक्व हो जाते हैं, लेकिन पौधों में सक्रिय विकास अवस्था बनी रहती है और कोई ऊपरी गिरावट नहीं होती है। खरीफ मौसम में पिगमेंट के विकास, बल्ब का आकार और आकार को परिपक्वता के निर्धारक के रूप में लिया जाता है। कटाई किए गए बल्बों को तीन दिन तक खेत में छोड़ दिया जाता है, जो उन्हें कठोर और सूखे करता है और उनकी रख–रखाव में मदद करता है। खरीफ मौसम में प्याज का समुक्षमीकरण बेहतर रख–रखाव के लिए महत्वपूर्ण होता है, लेकिन उच्च आर्द्रता और बादली मौसम में समुक्षमीकरण को सुविधाजनक नहीं बनाते हैं और खराब होने, सड़ने और अंकुरण के कारण और अधिक हानि पहुंचाते हैं।

परिवहन और भंडारणः

उत्पादन के बाद, उन्नत तकनीकों का उपयोग करके उच्च गुणवत्ता वाले प्याज को सुरक्षित रखने और परिवहन करने के लिए उन्नत भंडारण और परिवहन की व्यवस्था करनी चाहिए।